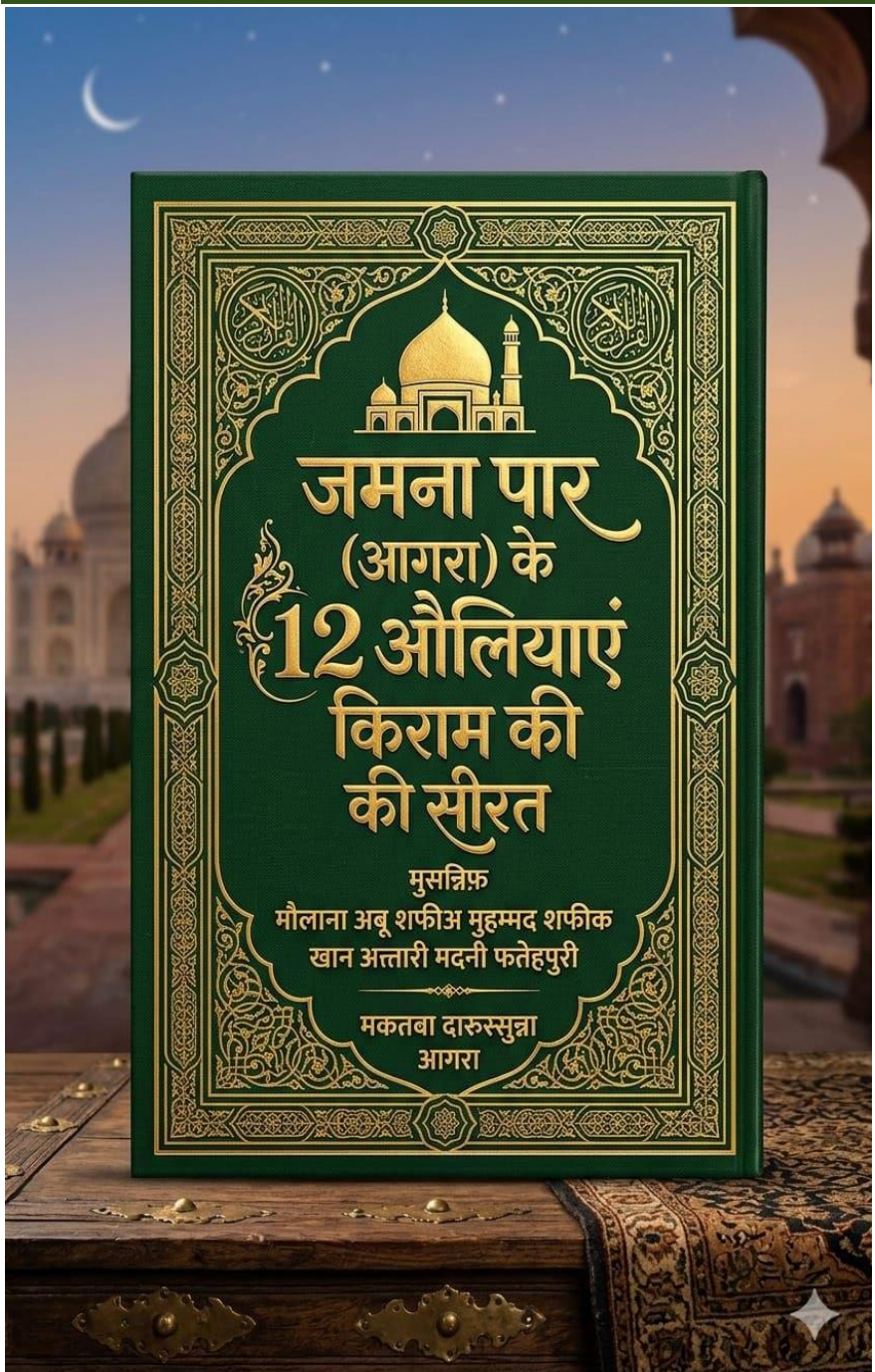
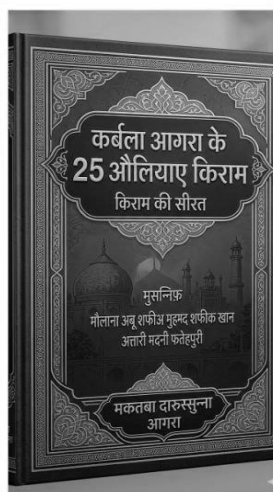
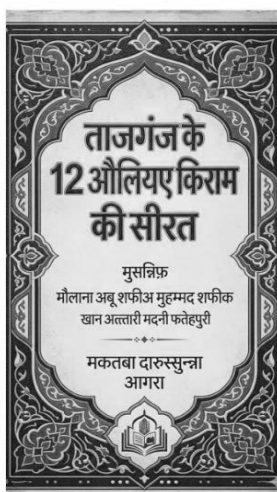
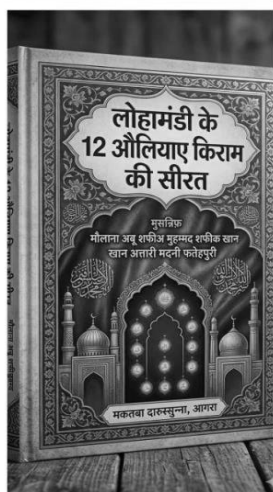
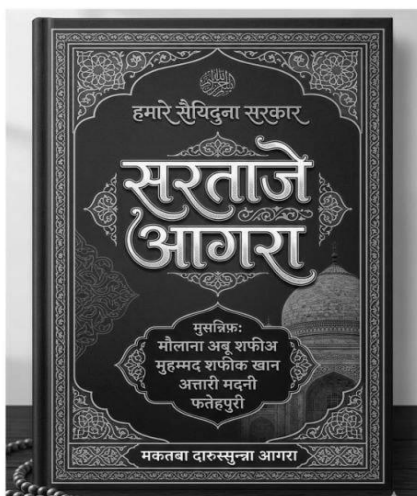
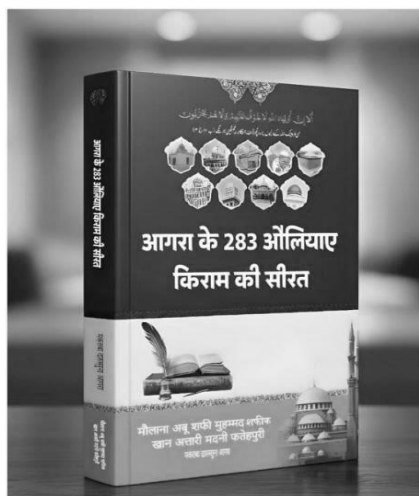




आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों ।



किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुहम्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुहम्मद शरीफ़ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अत्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअत होने की वजह से अपने नाम के साथ अत्तारी लिखते हैं, आपकी विलादत कस्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ए. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क्रियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ़ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उलूम बनाम जामिया अरबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में **क्रारी इक़बाल अहमद अत्तारी** से कुरआने पाक नाज़िरा और हज़रत **मौलाना अतीकुर्रहमान मिस्बाही** से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ़ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इल्मी इदारे अल

जामिअतुल अशरफिया मुबारकपुर आ'जमगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उलूम ग़ौसिया (जो जिला आ'जमगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना, फैज़ाने अत्तार नेपालगंज, नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए हदीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फरागत के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, आगरा तशरीफ़ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअतुल मदीना तशरीफ़ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआत के दरजए सानिया में चलने वाली इल्मे सर्फ़ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिआ में चलने वाली इल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह अश शफ़ीकुन नोअमानी तसनीफ़ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ़ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली हदीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह शफ़ीकिया तहरीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफ़ात का सिलसिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिअ आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़िव्या की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक्रर्रि और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक्रतन फ़वक्रतन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ़ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलियत अता करके मौसूफ़ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आज़िज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवाल: औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाब: किसी वली के मज़ार मुबारक पर हाज़िरी का तरीक़ा येह है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारका की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है ।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक्रा! आप पर सलाम हो ।

(فتاویٰ رضویہ، ۹/۵۲۲، خزائن آراء و فتاویٰ مجلس مرکز الاولیاء لاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलगरज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो ।

आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़

عَنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैखुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनकूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर ख़ुसरु रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ ख़ुसरु! मशाइख़ के मलफ़ूजात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुजुर्ग़ानि दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे ख़ाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क्रियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿۱۶۹﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़्याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (प, ४, آل عمران, १६९)।

लेकिन उन बुजुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, खाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है ।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए । आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुजुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

खानवादे चिश्तिया के बुजुर्गाने दीन

खानवादे चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख सिधारी चिश्ती, शैख ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुजुर्गाने चिशत अहले बहिश्त का तज़किरा इस किताब में मौजूद है ।

खानवादे नक़्शबंदिया के बुजुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख़्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए शत्तारिया के बुजुर्गाने दीन

और मशाइखीने शत्तारिया में शैख ज़ियाउल्लाह, शैख अब्दुल्लाह, शैख बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए मदारिया के बुजुर्गाने दीन

और खानवादाए मदारिया में शाह फ़र्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़िकरा मौजूद है ।

नक्शबंदिया पौधे में चिशितया शाख पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूर मारुफ़ है, इस की शाखें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुन्इम, खलीफ़ा अबुल कासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख वली मुहम्मद वगैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है ।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख अबुल फ़त्ताह, मीर अबुल गैस बुखारी, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद अहमद बुखारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख बा यज़ीद शरवानी, शैख बा यज़ीद खवेशगी, ख्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुखारी, शैख चंदन कुरैशी, मौलाना शैख हसन शीराज़ी, शैख हुसैन बदखशी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख्वाजा खिज़र, शैख खलील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफीअ सब्ज़ पोश, मीर रफीउज़्ज़मान, शैख सालिम, सक्रा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल्लाह खटवासन, शैख अब्दुल्लाह बुखारी, शैख अब्दुलहकीम, ख्वाजा अब्दुर्रुफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख अबदी, शैख फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख कमाल, शैख कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख मुहिबुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुखारी, शैख मुहम्मद ज़ाहिद, शैख मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख नाज़िर, शैख नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख यूसुफ़ लंक, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियाँ रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी खाकी शाह, बीबी कुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं ।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक्रअत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक़रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, खुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख बुढन शत्तारी, शैख चंदन कुरैशी, शैख नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख अबुल फ़तह मक्की, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख मुबारक, शैख ज़ैनुद्दीन, शैख शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारंगी वगैरा बाबरी, हुमायूनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज़्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख मुनव्वर चिश्ती, शैख आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल वहहाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख अब्दुर्हमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़ल, शैख अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्ज़ुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईखीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख मुहम्मदी, शैख मुहम्मद सालेह, शैख नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्शीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सलतनत के तनज़्ज़ुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्ज़ुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफ़ुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफ़ा और मशाईखीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक्ररीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक़ यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईखीन की खानकाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क्रद्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ़ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए क़िबार यानी बड़े औलियाए क़िराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वग़ैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवमैँट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख़
तुर्बुतों में खाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
खाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की खानकाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बागात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर ग़ैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में ग़ैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिलज़, कॉटन मिलज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरों मारुफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज़्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के बुज़ुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख़्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़््शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने “बोस्ताने अख्यार” नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम “आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत” दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर खुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्हीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी खूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़िकरा मुस्तनद तारीखी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक्रार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला खुद को आगरा की गलियों, खानकाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक्किक्कीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीखी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक्कीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

📖 **सदकए जारिया का बेहतरीन मौका** 📖

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक्राबिर व औलियाए किराम की मुकद्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आखिरत सँवारें।

📖 किताब: बोस्ताने अख्यार

🏠 मौजू: आगरा के 283 बुजुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

📖 इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, गरीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक्रसीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

💰 तक्रसीम रेट:

◆ 1 किताब — ₹350

◆ 5 किताब — ₹1750

◆ 10 किताब — ₹3500

✨ जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

✨ बुजुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

👉 आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

👉 आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल कीमत **700 रुपये** रिआयती कीमत **350 रुपये**

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

जमना पार (आगरा) के 12 औलियाए किराम की प्यारी सीरत राजघाट (जमना पार)

(1) ख्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक्रशबंदी

आप रहमतुल्लाह अलैह ख्वाजा अबुल फ़ैज इब्ने ख्वाजा मुहम्मद अब्दुल्लाह पिसरे कलां ख्वाजा मुहम्मद अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्जंद रशीद यानी बेटे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के दादा पीर हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह जुमला उलूमे अक़ली व नक़ली ख़ुसूसन तिब्ब व हिक्मत में उस्तादे ज़माना और हफ़्त क़लम की ख़ुश नवेसी में शोहरए आफ़ाक़ थे, तमाम औसाफ़े हमीदा और ख़साइले पसंदीदा से मौसूफ़ और तालिबाने ख़ुदा के रहनुमा थे।

सखावतो दरिया दिली का येह आलम था कि जो कुछ जागीर से आता सब ग़रीबों में तक्रसीम कर देते थे, 987 हिजरी बमुताबिक़ 1579 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह को हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत और हज्जे बैतुल्लाह का शौक़ पैदा हुआ, अक़बर बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को मीरे हाज मुक़र्रर कर के और बहुत सा ज़ादे राह देकर निहायत ऐज़ाज़ से रुख़सत किया, हज से फ़ारिग़ हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में तशरीफ़ लाए और दरबारे शाही से किनारा कशी कर के बक़ीया उम्र इबादतो रियाज़त में बसर की। आख़िरे कार 12 रबीउल अव्वल 999 हिजरी बमुताबिक़ 1590 ईस्वी को सफ़रे आख़िरत इख़्तियार फ़रमाया।

मज़ार मुबारक जमना पार दरिया के किनारे राजघाट के सामने वाक़ेअ है, एक साथ तीन मज़ार हैं। उन में मशरिकी मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह का, मग़रिबी मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा अमीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह का जो कि हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के पीर हैं और तीसरा ग़ालिबन आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे ख़्वाजा मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाह अलैह का है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 207.208)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नज़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह सरताजे आगरा हज़रत अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के दादा पीर हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक राजघाट जमना पार है।

जिसका रास्ता बेलनगंज के बिरिज से पार हो कर एत्मादुद्दौला की जानिब जाकर थाना एत्मादुद्दौला आएगा, थाना के सामने से एक रास्ता मज़ार मुबारक के लिए गया है, अगर रास्ता समझ में ना आए तो थाना के पास किसी से पूछ लें कि दादा पीर की दरगाह का रास्ता कौन सा है?

मज़ार मुबारक निहायत सादा है मगर पुर बहार है, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के बग़ल में आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा और हज़रत अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब हज़रत मीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक भी जलवा लुटा रहा है। एक क्रतार में तीन मज़ार हैं, क़िब्ला की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत मीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह की, बीच में आप रहमतुल्लाह अलैह की और पूरब की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह के शहज़ादे ख़्वाजा मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाह अलैह का है।

उर्स 21,22 जिलक़ादा को होता है। नामों की तख्ती सिरहाने की दीवार में लगी है जिसमें ये लिखा हुआ है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ला इलाहा इल्लल्लाह

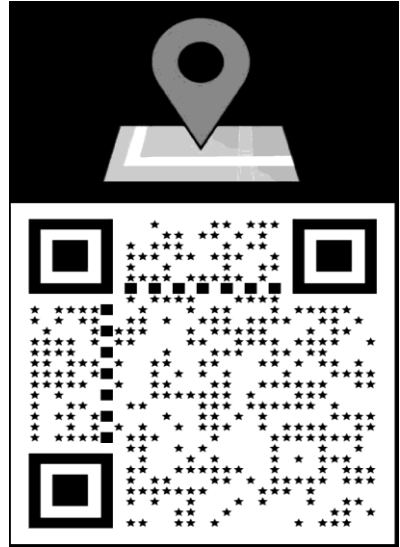
तारीखे वफ़ात ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी अलमारूफ़

दादा पीर रहमतुल्लाह अलैह

12 रबीउल अब्बल 999 हिजरी बमुताबिक़ 1690 ईस्वी

फिर फ़ारसी के तीन अशआर लिखे हैं।

ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी
नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार
के **Location** का **QR Code**
इस को अपने मोबाइल से **Scan**
कीजिए, आप के मोबाइल पर
Location खुल जाएगी, जिस
की मदद से आसानी के साथ
आप मज़ार मुबारक तक पहुँच
सकते हैं।



(2) ख़्वाजा मुहम्मद ज़करिया

आप रहमतुल्लाह अलैह ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के फ़ज़्द रशीद यानी बेटे, मुरीदो, खलीफ़ा और सज्जादा नशीन हैं निहायत बुजुर्ग और बाबरकत शाख्स थे, अपने वालिद बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह क़रीब जमना पारा आराम फरमा रहे हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज 170)

(3) मीर अब्दुल्लाह अहरारी

आप रहमतुल्लाह अलैह ख्वाजा मुहम्मद यहया इब्ने अबुल फ़ैज़ अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा और हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह अम्मे बुजुर्गवार यानी चचा और सुसर और पीर हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह साहिबे विलायत और कुतुबे वक़्त थे। अपने कमालात को मुलाज़िमते शाही के पर्दा में पोशीदा कर रखा था, अकबर बादशाह के ज़माने में सबसे पहले दिल्ली के नाज़िम थे।

इस के बाद बुरहानपुर में किसी ख़िदमत पर मामूर हुए। आखिरे कार मुलाज़िमत यानी नौकरी को छोड़ कर आगरा में तशरीफ़ लाए और गोशा नशीनी इख़्तियार की।

23 ज़िलक़ादा को आप रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फ़रमाई और जमना पार दरिया के किनारे अपने पीर के क़रीब (जानिब मगरिब इस्तिराहत में मसरूफ़ हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वहीं है। (बोस्ताने अख्यार, पेज 98.99)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह सरताजे आगरा हज़रत अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के चचा, सुसर और पीर हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक राजघाट जमना पार है, जिसका रास्ता बेलनगंज के बिरिज से पार हो कर एत्मादुद्दौला की जानिब जाकर थाना एत्मादुद्दौला आएगा, थाना के सामने से एक रास्ता मज़ार मुबारक के लिए गया है, अगर रास्ता समझ में ना आए तो थाना के पास किसी से पूछ लें कि दादा पीर की दरगाह का रास्ता कौन सा है ?

मज़ार मुबारक निहायत सादा है मगर पुर बहार है, मज़ार मुबारक के ऊपर टीन शैड लगा हुआ है, दो दरख़्त मज़ार पर साया किए हुए हैं, एक

पुरानी और बावक्रार मस्जिद और मेहमान खाना भी मौजूद है। मजार मुबारक की देख भाल करने के लिए दरगाह के इहाते में कई लोग रहते हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मजार के बगल में आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर हजरत ख्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक्रशबंदी रहमतुल्लाह अलैह का मजार मुबारक भी जल्वे लुटा रहा है। एक क्रतार में तीन मजार हैं क़िब्ला की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह का, बीच में आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब रहमतुल्लाह अलैह का और पूरब की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब के शहजादे ख्वाजा मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाह अलैह का है।

उर्स 21,22 ज़िलक़ादा को होता है। नामों की तख्ती सिरहाने की दीवार में लगी है जिसमें येह लिखा हुआ है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हुज़ूर पुरनूर कुतुबुल अबरार सैय्यिदुना मौलाना हज़रत अमीर

अब्दुल्लाह अहरारी नक्रशबंदी रहमतुल्लाह अलैह

चीनी का रौज़ा(जमना पार)

(4) अल्लामी अफ़ज़ल खां शीराज़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम मुल्ला शुक्रुल्लाह है, शीराज़ के रहने वाले और मीर इब्राहीम हम्दानी और मीर तक़ीउद्दीन मुहम्मद शीराज़ी जैसे मशहूर फ़ुज़ला के शागिर्दे रशीद थे, जुमला उलूमे अक़ली व नक़ली में कमाल हासिल कर के मुद्दत तक अपने वतन शीराज़ में दसों तदरीस में मसरूफ़ रहे। फ़साहतो बलागत में हस्साने वक़्त और हैअतो हिंदसा में कामिल महारत रखते थे।

जहांगीर बादशाह के जमाने में बतौर सैर सयाहत सूरत गुजरात होते हुए बुरहानपुर में आए, येह शहर उस वक़्त मुग़लिया गवर्नर का दारुल हकूमत और बहुत बड़ा तिजारती और फ़ौजी मर्कज़ था, ख़ान ख़ानां अब्दुरहीम ख़ां यहां के गवर्नर थे, जिनके दरबार में ऐसे ऐसे अहले कमाल जमा थे कि सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा और मीर शेर अली का ज़माना याद आता था। आप रहमतुल्लाह अलैह की मुलाक़ात ख़ान ख़ानां से हुई वो निहायत दरिया दिल, कमाल परवर बल्कि अहले कमाल के आशिक़ थे, पहली ही मुलाक़ात में कुछ ऐसी आलिमाना बातें और मदारातें हुई कि आप रहमतुल्लाह अलैह गिर्वीदा हो गए और सब सैरो सयाहत के मन्सूबों से दस्त बर्दार हो कर ख़ान ख़ानां की मुसाहिबत इख़्तियार कर ली।

चंद मुद्दत तक उनकी ख़िदमत में रहे जब अकबर बादशाह का बेटा शाहज़ादा ख़ुर्रम ने आप रहमतुल्लाह अलैह के इल्मो कमालात का हाल सुना तो ख़ान ख़ानां से मांग कर अपनी सरकार में ले लिया और अपने लश्कर का मीर अदल मुक़र्रर फ़रमाया, राना अमर सिंगा की मुहिम में आप रहमतुल्लाह अलैह शहज़ादे ख़ुर्रम के साथ थे। राना से मुसालिहत होने में आप रहमतुल्लाह अलैह की हुस्ने ख़िदमत से जहांगीर ने खुश हो कर अफ़ज़ल ख़ां ख़िताब मर्हमत किया, रोज़ बरोज़ शाहज़ादे की ख़िदमत में भी आप रहमतुल्लाह अलैह की इज़्जत और ऐतिबार बढ़ता गया यहां तक कि मीर अदल से तरक्की कर के आप रहमतुल्लाह अलैह शाहज़ादे की सरकार के दीवाने कुल हो गए। इन्ही दिनों में आप रहमतुल्लाह अलैह बीजापुर के सफ़ारत पर रवाना किए गए। येह काम भी आप रहमतुल्लाह अलैह ने निहायत खुश उस्लूबी से अंजाम दिया।

जब बादशाह जहांगीर और शहज़ादे में मुख़ालिफ़त पैदा हुई तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने हाज़िरे दरबार हो कर बाहमी मुसालिहत की पूरी कोशिश की मगर चूँकि नूरजहां बेगम इस मुख़ालिफ़त की बानी मुबानी थी इसलिए कोई

कोशिश और तदबीर कारगर ना हुई और बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को अपनी सरकार में रखकर खिदमत खान सामानी के खिलअत से मुफ्तखिर किया।

शाहजहाँ बादशाह ने तख्त नशीन होते ही मन्सब चार हजारी (यानी चार हजार सिपाहियों का अमीर) पर सरफ़राज़ और मीर सामानी की खिदमत से मुम्ताज़ किया और दूसरे साल यानी 1048 हिजरी में मन्सबे पंज हजारी से मुताफखिर कर के वज़ारते आजम के सबसे बड़े ओहदे से सरफ़राज़ किया।

शाहजहाँ बादशाह ने अपने तख्त नशीन होने के ग्यारहवें साल में मन्सब हफ़्त हजारी (यानी सात हजार सिपाहियों का अमीर) पर आप रहमतुल्लाह अलैह को मुकर्रर किया और इस से बड़ा और कोई मन्सब ना था और बारहवें साल में आप रहमतुल्लाह अलैह बीमार हुए, 9 रमज़ान 1048 हिजरी को बादशाह खुद इयादत के वास्ते मकान पर आया, शाही तबीबों से ईलाज कराया मगर चूँकि पैमानए हयात लबरेज़ हो चुका था किसी के ईलाज ने फ़ायदा ना बख़्शा और 12 रमज़ान 1048 हिजरी को मक़ाम लाहौर, 70 बरस की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फ़रमाई।

शाहजहाँ बादशाह को आप रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल का सख्त सदमा हुआ, कई मर्तबा कहा: वज़ीर ब तदबीर ने अपनी 28 साला मुलाज़िमत में किसी एक शख्स की भी बुराई हम से नहीं की।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा में एक आलीशान हवेली तामीर कराई थी जिसके इख़्तितामे तामीर की तारीख 1030 हिजरी है। इस के इलावा एक हवेली लाहौर में और एक बाग़ कश्मीर में बनवाया था, हवेली का कोई निशान अब बाक़ी नहीं रहा लेकिन आगरा में आप रहमतुल्लाह अलैह का मक़बरा यानी मज़ार मुबारक अब तक मौजूद है और जमना पार दरिया के किनारे

चीनी के रौजा के नाम से मौसूम और बावजूद शिकस्ता हाल होने के आगरा की काबिले दीद खुशनुमा इमारतों में शुमार होता है।

अब्दुल हक़ शीराज़ी मशहूर खुश नवेश जो अमानत खां के खिताब से मौसूम और मुस्ताज़ महल के रौजा (यानी ताज महल के कतबों का बेनज़ीर कातिब और सन्नाअ था आप रहमतुल्लाह अलैह का हक़ीक़ी भाई था, उस के बेटे इनायतुल्लाह को जो आक़िल खां के खिताब से मौसूम है आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपना मुताबन्ना बेटा यानी गोद लिया हुआ बेटा बनाया था। (बोस्ताने अख्यार, पेज 47.49)

एत्मादुद दौला

(5) बेगम सुल्तान

आप रहमतुल्लाह अलैहा मौलाना कमाल की नेक बेटी और हुमायूँ के ज़माने की एक आरिफ़ा थीं, आप रहमतुल्लाह अलैहा का मज़ार मुबारक पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल रौजा एत्मादुद दौला वाक़ेअ है, तावीज़े मज़ार पर आयतुल कुर्सी और पाईती पर

वफ़ात मरहूमा मग़फ़ूरा बेगम सुल्तान बिनत मौलाना कमाल दर सन

नह सद व चहल व पंज अज़ हिज़्रत यानी 945 हिजरी

लिखा हुआ है, कुछ अराज़ी उस के अख़राजात के वास्ते माफ़ यानी वक़फ़ चली आती है, (बोस्ताने अख्यार, पेज 61)

तकिया मानुल्लाह (जमना के किनारे)

(6) शैख़ अब्दुल लतीफ़ बरी

आप रहमतुल्लाह अलैहा आगरा के पुराने बुजुर्गों में से हैं, किसी तज़क़िरा या तारीख़ की किताब में आप रहमतुल्लाह अलैहा का ज़िक़रे ख़ैर नज़र से नहीं

गुजरा, मगर गालिब गुमान है कि आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद बदरुद्दीन इब्ने सैय्यिद जलाल मुतावक्किल रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्जदे रशीद यानी बेटे और शाह अज़मतुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मुत्तसिल पक्की सड़क जमुना के किनारे तकिया मानुल्लाह में गुंबद के अंदर वाक़ेअ है, क़रीब में एक कनाती मस्जिद बनी है। दोनों से क़दामत यानी पुराने होने के आसार नुमायां यानी ज़ाहिर हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज 112)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस मोबाइल नंबर (8808693818) पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

बाग़ जहाँ आरा बेगम (बाग़ सैय्यिद) जमना पार

(7) सैय्यिद मुहम्मद शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद के शहीदों के ज़ूमे में हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक बहुत पुराना है, जो जमना पार दरिया के किनारे बाग़ जहाँ आरा बेगम मौसूमा बाग़ सैय्यिद में एक हुजरे के अंदर ज़ियारत गाह ख़ासो आम है।

क़रीब में एक छोटी सी मस्जिद बनी है, रौशनी के वास्ते रौज़ा मुमताज महल (ताज महल) के खज़ाने से अब तक आठ आना माहवार मिलता है। (बोस्ताने अख्यार, पेज 154.155)

नवल गंज(जमना पार,ऐतिमादपुर)

(8) काले खां शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह शहीदों के ज़ुमे में हैं, कुरबो जवार के लोगों को आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से बेइंतिहा अक्रीदत है, मज़ार मुबारक जमना पार ऐतिमादपुर की सड़क पर नवल गंज के करीब वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज143)

कछपुरा (जमना पार)

(9) मुफ़्ती शैख बहाउद्दीन

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख शम्सुद्दीन महबूब मुल्तानी इब्ने शैख पीर अल कुरैशी अल असदी अल हाशमी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़दे रशीद यानी बेटे और शैखुल मशाईख हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी रहमतुल्लाह अलैह की नस्ल में हैं, उलूमे अक़ली व नक़ली में यगानए रोज़गार और कमालाते बातिनी में शोहरए आफ़ाक़ थे, बहुत सी पोशीदा बातें आप रहमतुल्लाह अलैह के आईना नुमा दिल पर ज़ाहिर हो जाती थीं।

खिलाफ़तो सआदत वालिदे बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह से पाई थी। जिस ज़माने में सुल्तान हुसैन ने भक्कर से मुल्तान में आकर फ़िल्ना व फ़साद मचा रखा था बहुत से शुरफ़ा, नोजबा और सादात ने वहां से जिला वतनी इख़्तियार की। आप रहमतुल्लाह अलैह भी वतन छोड़ कर आगरा में तशरीफ़ लाए और बादशाह बाबर शाह के ज़माने में यहां की सुकूनत इख़्तियार फरमाई।

आप रहमतुल्लाह अलैह बेचारों के चारा साज़, बेकसों के यार और तालिबाने दीनो दुनिया के रहनुमा और मददगार थे, बेचारों, बेकसों, मज़लूमों की मतलब बर आरी के वास्ते अपनी बुजुर्गी का लिहाज़ नज़र अंदाज़ कर के

अहले दुनिया के दौलत खानों पर बिला तकल्लुफ़ जाते और जहां तक मुम्किन होता खल्के खुदा को फ़ैज़ पहुंचाते थे।

एक मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह हाफ़िज़ इसहाक़ नामी एक शख्स को सिफ़ारिशी ख़त सुलैमान करनी वालिए बंगाल के नाम दिया, जब ग़रीब हाफ़िज़ येह ख़त लिख कर सुलैमान के पास पहुंचा तो उस की ज़बान से इत्तिफ़ाक़िया येह जुमला निकल गया कि ईरानी और तूरानी बाशिंदों को हमारे नाम सिफ़ारिशी ख़त लिखने का कोई हक़ नहीं है, बेचारा हाफ़िज़ जो इस क़द्र दूरे दराज़ मुसाफ़त तै कर के वहां पहुंचा था येह ना उम्मीदाना तक्ररीर सुनकर सख़्त ना उम्मीद हुआ। रात के वक़्त शैख़ रहमतुल्लाह अलैह ने आलमे ख़्वाब में आकर सुलैमान को मुतनब्बा और नादिम किया जिस ने सुब्ह सवेरे हाफ़िज़ को तलब करके उस का काम बना दिया।

अब्दूरज़्ज़ाक़ सौदागर मुल्तानी से रिवायत है कि शैख़ रहमतुल्लाह अलैह के इत्कि़ाल के बाद एक मर्तबा मेरा नौकर तमाम नक़दो सामान लेकर आगरा से भाग गया, मैं सख़्त परेशान था कि इसी हालत में शैख़ रहमतुल्लाह अलैह की रूहे पाक की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ, रात को ख़्वाब में देखा कि आप रहमतुल्लाह अलैह मुसल्ला कंधे पर डाले हुए मस्जिद की तरफ़ जा रहे हैं, मैंने जल्दी से दौड़ कर अपना सर आप रहमतुल्लाह अलैह के क़दमों पर रख दिया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया इतनी ख़ुशामद ना कर और इत्मीनान रख कि भागे हुए शख्स और माल दोनों का पांव तेरी रोज़ी की ज़ंजीर में फंसा हुआ है, लिहाज़ा जल्द पहुंचा हुआ समझना। दो रोज़ के बाद इस ख़ुशख़बरी का ज़हूर हो गया और गुलाम तमाम मालो अस्बाब के साथ पकड़ा हुआ आया, एक कौड़ी की भी ख़ियानत नहीं हुई।

आप रहमतुल्लाह अलैह तमाम उम्र दसों तदरीस और लोगों को फ़ैज़ पहुंचाने में मशगूल रह कर, 11 शव्वाल 978 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह

ने सफ़रे आख़िरत इख़्तियार फ़रमाया और जमना पार अपने मुहल्ला मौसूमा मुफ़्ती पुरा में सिपुर्दे खाक किए गए, अब इस मुहल्ला का नामो निशान तक मिट गया है, आसारे क़दीमा रेल की वजह से नीस्तो नाबूद हो गए सिर्फ़ मस्जिद हुमायूँ चंद पुराने मज़ारात के साथ यादगारे क़दीम बाक़ी रह गए हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता भी निहायत तलाशो तहक़ीकात से चला है जो जमना पार मौज़ा कछ पुरा के क़रीब मशरिक़ी जानिब वाक़ेअ है, साकिनाने हवेली जो अपने आपको सिंधी कहते हैं हर साल 7 सफ़र को इस मज़ार पर हाज़िर हो कर उर्स किया करते हैं, ग़ालिबन उन लोगों के मूरिसाने आला यानी दादा पर दादा मुल्तान से हज़रत शैख़ बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के साथ तशरीफ़ लाए होंगे।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज 56, 58)

(10) मौलाना शैख़ ज़ैनुद्दीन ख़वाफ़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह बाबर बादशाह के ज़माने सल्तनत में काबुल से आगरा में तशरीफ़ ला कर जमना पार आबाद हुए। अक्सर उलूमो फ़ुनून में यगाने रोज़गार ख़ुसूसन फ़न्ने मुअम्मा, तारीख़, फ़िल बदीह शेअर गोई और नज़मो नस्र के तमाम कमालात में बेनज़ीर थे, **वफ़ाई तखल्लुस और मुअम्माई ख़िताब** था।

जब आप रहमतुल्लाह अलैह बाबर बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उसने उम्र दरयाफ़्त की, आप रहमतुल्लाह अलैह फ़िल बदीह जवाब दिया, बाबर बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह के इल्मो फ़ज़ल को देख कर सदारते कुल के मन्सबे जलीला पर सरफ़राज़ किया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा में एक मदरसा और मस्जिद तामीर कराई थी मदरसा का अब पता नहीं मस्जिद

मौजूद है और जमना पार मौजा कछपुरा में वाक्रेअ और मस्जिद हुमायूँ के नाम से मौसूम है।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने हिन्दुस्तान के हालात और उस की फ़तह के बयान में एक तारीख़ लिखी थी जिसमें अपने कमालाते सुखन वरी के जौहर दिखाए थे, “वाक़िआते बाबरी” का (जो खुद बाबर की लिखी हुई तारीख़ है) तुर्की ज़बान से फ़ारसी ज़बान में निहायत फ़सीहो बलीग़ इबारत में तर्जमा किया था।

940 हिजरी बमुताबिक़ 1533 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने चुनार के मक़ाम पर इंतिक़ाल फ़रमाया और अपने मदरसा में दफ़न किए गए जो कि आगरा में वाक्रेअ है, ग़ालिबन क़ब्रिस्तान मुत्तसिल मस्जिद हुमायूँ में आप आराम फरमा हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज 80.81)

(11) मौलाना अबुल वाजिद फ़ारगी

आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी दरवेशी और कमालात को शायरी के लिबास से छुपा रखा था। निहायत शीरीं ज़बान और नेक दिल बुज़ुर्ग़ थे, शैख़ ज़ैनुद्दीन मुअम्माई रहमतुल्लाह अलैह के यारे ग़ार और उन्ही के साथ काबुल से हिन्दुस्तान में आए थे, जब येह दोनों यार काबुल से ख़ाना हुए तो ऐसे मुफ़लिस थे कि सिवाए एक पुराने पोस्तीन के और कुछ पास ना था, शैख़ ज़ैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने कहा कि चलो इसी को बाज़ार में बेच कर कुछ ज़ादे राह साथ ले लें, ग़र्ज़कि दोनों यार काबुल के बाज़ार में पहुंचे, एक शख़्स ख़रीदार मिला, क़ीमत में झगड़ा हुआ, ख़रीदार पाँच अशफ़ी लगाता था, येह लोग कुछ ज़्यादा मांगते थे। बावजूद क़ौलो करार आप रहमतुल्लाह अलैह से ना रहा गया और ख़रीदार से कहने लगे कि ऐ बे इन्साफ़! इस पारा पारा पोस्तीन

में पाँच अशर्फी की तो सिर्फ जुएँ और पिस्सू ही हैं, कपड़ा नफ़ा में है, इस गुप्तगु से मुआमला दरहम बरहम हो गया, शैख जैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह बहुत खफ़ा हो कर कहने लगे कि इस वक़्त एक एक रोटी को मुहताज हैं मगर आप की खुश तबई नहीं जाती।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि अल्लाह रज़ाक़ है उस पर भरोसा रखो। आखिरे कार दोनों साहिब आगरा में आकर जमना पार सुकूनत पज़ीर हुए, बाबर बादशाह का ज़माना था, शैख जैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह अपने इल्मो फ़ज़ल की वजह से सदारते कुल के ओहदे पर सरफ़राज़ हो गए, आप रहमतुल्लाह अलैह उनकी रफ़ाक़त में रहे।

940 हिजरी में जब शैख जैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने सफ़रे आखिरत इख्तियार किया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने भी हक़के रफ़ाक़त अदा किया और चंद ही दिन बाद सराए फ़ानी से कूच कर के दोस्त के बराबर आराम किया।

मज़ार मुबारक का मक़ाम जमना पार मौज़ा कछपुरा में मस्जिद हुमायूँ के करीब है मगर कोई मज़ार नामज़द नहीं।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 35.36)

(12) मौलाना शहाबुद्दीन मुअम्माई

आप रहमतुल्लाह अलैह बाबर बादशाह के साथ हिन्दुस्तान में तशरीफ़ लाए थे, तमाम उलूमे अक़ली व नक़ली में महारते कामिला रखते थे लेकिन फ़न्ने मुअम्मा में आप रहमतुल्लाह अलैह की फ़ज़ीलत ऐसी मशहूर हुई कि सब कमालात छुप गए।

इस फ़न में आप रहमतुल्लाह अलैह ने एक बेनज़ीर रिसाला लिख कर हुमायूँ बादशाह की ख़िदमत में पेश किया था, इस के बदले में हुमायूँ

बादशाह ने एक माकूल ईनाम के साथ एक रुबाई लिख कर आप रहमतुल्लाह अलैह के पास भेजी थी।

हजरत अमीर खुसरू देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर आप रहमतुल्लाह अलैह ने एक तख्ती लगवा कर तारीख लिखवा दी थी जो अब तक आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार है।

942 हिजरी बमुताबिक 1535 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने सफ़रे आखिरत इख्तियार किया। 'शहाबुस्साकिब' के अदद 942 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल की तारीख है और आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मुत्तसिल मस्जिद हुमायूँ कछपुरा है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 89)

सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्वए नूरे खुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिरागे पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
खानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिश्ती सुहर्वर्दी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते खुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकूं का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की खाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की खाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औक्रात क्या बेखुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं
शायर :वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान